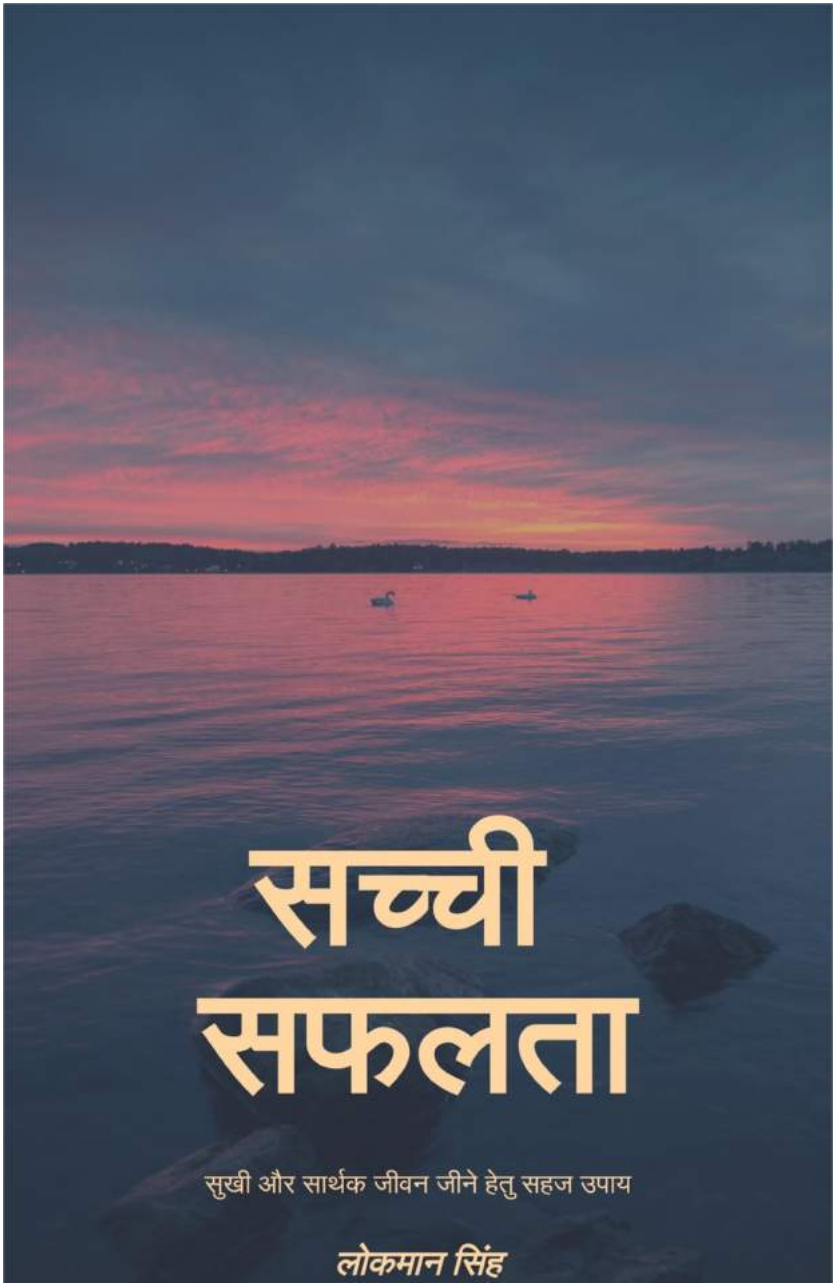
सच्ची
सफलता
सुखी और सार्थक जीवन जीने हेतु सहज उपाय
लोकमान सिंह

सच्ची सफलता

सुखी और सार्थक जीवन जीने हेतु सहज उपाय

-लोकमान सिंह-

Copyright Information

Sachchi Safalta – by Lokman Singh

All rights reserved with the Author.

No part of this book may be copied, sold, or reproduced in any form or by any means, electronic or mechanical, including recording, without permission from the author.

Copyright applies to all formats, including printed books, eBook formats such as html files, PDF, Kindle, and all other eBook and book formats.

Printed by:

Price: INR 110.00

समर्पण

यह पुस्तक मेरे दो बड़े भाईयों श्री नाहर सिंह और स्वर्गीय श्री सुघड़ सिंह जी को समर्पित है जिनकी प्रेरणा और अद्वितीय सहयोग से मेरे जीवन की नाव कीचड़ भरे नाले से निकलकर पवित्र गंगा रूपी सफल जीवनधार में हिलोरे ले सकी है।

आपकी अनौखी प्रेरणा और सहयोग से मेरा अपना जीवन तो सफल और परम आनंददायी हुआ ही है अपितु जाने कितने और जीवन इस सच्ची सफलता की मार्गदर्शक मशाल रूपी पुस्तक श्रंखला से प्रकाशवान होंगे।

प्रस्तावना

इस पुस्तक के माध्यम से आसानी से यह उपाय प्राप्त किया जा सकता है:-

- कि आप जहाँ हैं,जैसे हैं वहीँ से सफलता का मार्ग कैसे प्राप्त कर सकते हैं|
- कि कैसे आप भी सफलता के वरदान को प्राप्त कर सकते हैं|
- कि कैसे आप भी दूसरों के जैसे अपितु उनसे आगे सफलता की पटकथा लिखकर अपना जीवन सार्थक बना सकते हैं|
- कि कैसे आप अपने बचे हुए जीवन को उपयोगी और महत्वपूर्ण बना सकते हैं|

इस अद्भुत पुस्तक श्रंखला को ध्यानपूर्वक पढ़ने के बाद आप आसानी से यह समझ जायेंगे कि आपके जीवन का मूल उद्देश्य क्या है और उस उद्देश्य की प्राप्ति आपको कैसे हो सकती है | कैसे आप भी सफलता प्राप्त करके जीवन की उच्च स्थिति को प्राप्त हो सकते हैं ।

शायद आपकी असली चाहत भी यही है |

यह सच है कि इस पुस्तक में समझाई गयी बातों को गहराई से समझ मात्र से आपकी अपने जीवन के प्रति सोच और द्रष्टिकोण बदल सकतए हैं परन्तु ध्यान रहे जीवन में सच्ची सफलता का अनुभव आपको तब होगा जब आप इस पुस्तक में लिखे उपायों को अपने जीवन में अपनाना शुरू करेंगे |

~~~~~
~~~~~

सफल-जीवन

मानव जीवन आनंद-रस, बिरले पाते राज |
जो इस रस को पी सके, सो सुखिया सरताज ||
जीवन एक वरदान है, दुर्लभ मिलिया तोय |
सयाने हंस-हंस नाच ले, नासमझे ना रोय ||
जीवन मुठ्ठी रेत की, फिसल-फिसल के जाय |
जो छेती न चेतता, हाथ नहीं कुछ पाय ||
जीवन एक जलधार है, बहत-बहत बहे जाए |
वही सयाना जीव है, जो जापै नाव चलाय||
जीवन मुठ्ठी रेत की, फिसलत ते रूक जाय |
जे हाथ लगावे दूसरा, ते पूरा-पूरा पाय ||
जीवन एक वरदान है, मिलिया रे बड़भाग |
पूरा इसको जीईए, सुखद सफलता जाग ||
जीवन उत्सव एक है, जैसे हाट-बाज़ार |
बांटो-पाओ प्रेमरस, गाओ गीत मल्हार ||

-लोकमान सिंह 'सृजन'

पूर्व अभ्यास: आत्मनिरीक्षण

क्या आप सफल जीवन की तलाश में हैं ?

क्या आप अपने जीवन को सुखद बनाना चाहते हैं ?

क्या आप अपने जीवन में आनंद भरना चाहते हैं ?

क्या आप अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहते हैं |

क्या आप जीवन की कठिनाइयों और परिस्थितिओं से जीतने की कला सीखना चाहते हैं |

क्या आपके कुछ साथी बड़े बड़े काम करके धन और यश कमाकर सफलता की ऊंचाइयों को छू रहे हैं वहीँ आप सफलता की दौड़ में उनसे पछड़ रहे हैं| अथवा आपके कुछ रिश्तेदार अथवा परिवारीजन सफल होते जा रहे हैं और आप सफलता प्राप्त नहीं कर पा रहे हैं |

क्या आपका ऐसा विचार है कि क्यों किस्मत दूसरों का ही साथ दे रही है और आपका नहीं ?

क्या आप यह समझते हैं कि जो कुछ जीवन में आप करना और पाना चाहते हैं वह नहीं कर पा रहे हैं |

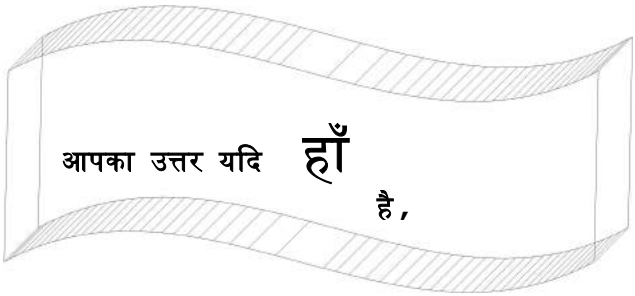

तो आप अपने इन प्रश्नों का उत्तर इस पुस्तक में पाकर जीवन की दशा और दिशा को वर्तमान स्थिति से सफलता और सुख की अविरल धारा की ओर ले जा सकते हो|

सफलता

के मार्ग पर
आपका स्वागत है |

अपना जीवन
सफल बनाने के लिए आपने जो
निर्णय लिया है,
वह सराहनीय है |

आप सफल हों,सुखी हों |
परम शक्ति
आपको सफल बनने का सामर्थ्य
प्रदान करे |

विषय-सूची

1.	सफल जीवन	10
2.	जीवन का उद्देश्य	23
3.	सफलता एक निजी विचार	24
4.	सफलता का कड़वा सच	25
5.	सच्ची सफलता	28
6.	सफल जीवन का प्राकृतिक मानक	30
7.	अंत:खोज	31
आगामी संस्करणों के बारे में		38
लेखक के बारे में		39

1 सफल-जीवन

सफलता के मार्ग पर चलने से पूर्व हमें यह जान लेना आवश्यक है कि जीवन की सच्ची सफलता का सही अर्थ क्या होता है |

अधिकतर लोगों की सफलता के बारे में यह धारणा है कि जब एक व्यक्ति अपने जीवन में प्रगति करके एक ऐसे ऊंचे शिखर को हासिल करले जहाँ पर दूसरे लोग उसे देखना चाहते थे, उसे सफलता कहते हैं | एक ऐसा मुकाम अथवा एक जिंदगी की एक ऐसी मंजिल जहाँ पहुँचने के बाद दूसरे लोग ऐसा कहने लगें कि 'इस व्यक्ति ने जीवन में बहुत प्रगति की है' अथवा 'किस्मत ने इस व्यक्ति का बड़ा साथ दिया है' अथवा आपके अपने लोग कहने लगें कि 'हमारे 'क-ख-ग ' ने जैसा हम चाहते थे वैसा कर दिखाया है'|

परन्तु आपको यह जानकर हैरानी होगी कि कि ऐसी सफलताओं का गहन विश्लेषण करने पर इनमें से अधिकतर सफलतायें खोखली पायी जाती हैं| आइये इस चौंकाने वाले तथ्य को समझने का प्रयास करते हैं:

'क-ख-ग' से यहाँ तात्पर्य किसी एक ऐसे नाम से है जिसने जीवन में ऊँचाइयों को छू लिया है।

अभ्यास

आप अपनी आँखें बंद करके अपनी जान-पहचान के ऐसे व्यक्तियों के नाम याद करें जिन्होंने अपने जीवन के लिए आवश्यकता का अपितु उससे भी अधिक हासिल कर लिया है और उनके पास वह सब कुछ है जो कि एक अच्छा जीवन जीने के लिए व्यक्ति को चाहिए होता है। आपके और अन्य लोगों के हिसाब से वह लोग सफल हैं। किस्मत ने उन्हें खूब दिया है परन्तु आस्चर्य की बात यह है कि फिर भी वह व्यक्ति परेशान रहते हैं। वे दुखी दिखाई देते हैं और समस्याओं ने उन्हें भी घेर रखा है।

उपरोक्त अभ्यास से अवश्य ही आपके ध्यान में कुछ ऐसे नाम आ गए होंगे| यदि नहीं तो राजनीति के क्षेत्र में, सिनेमा के क्षेत्र में, व्यवसाय के क्षेत्र में, अपने आसपास समाज के प्रतिष्ठित लोगों में ऐसे कई व्यक्ति आपको अवश्य ही मिल जायेंगे| भारतीय सिनेमा जगत और औद्योगिक घरानों में तो अनेकों व्यक्तित्व ऐसे हुये हैं जिन्होंने अपने जमाने में प्रसिद्धि और सम्पन्नता की दौड़ में सभी को पीछे छोड़ दिया था। कभी उनके नाम के चर्चे गली-गली में होते थे परंतु आश्चर्यजनक बात यह है कि इस सब के वावजूद भी उन्होंने आत्मदाह का रास्ता अपनाकर अपनी जीवन लीला समाप्त कर ली थी।

प्रिया जोकि एक बैंक मैनैजर थी, उसके पति एक बड़ी कम्पनी में उच्च पद पर कार्यरत थे। प्रिया पढाई में मेधावी थी और बड़ी मेहनती थी। प्रिया ने असाधारण मेहनत के बल पर बैंक मैनैजर का पद प्राप्त किया था। इस पद से उसे सांसारिक रूप से सर्व सम्पन्ता की अवस्था प्राप्त हुयी थी, परंतु यह क्या कि अचानक एक दिन प्रिया ने अपने जीवन को समाप्त कर लिया।

अक्सर हम जब भी किसी सरकारी कार्यालय अथवा किसी पब्लिक की सेवा में कार्यरत किसी कर्मचारी से काम के लिये मिलते हैं तो पाते हैं कि वह व्यक्ति चिड़चिड़ा व्यवहार करता पाया जाता है। यदि आप कुरेद कर देखें तो पायेंगे कि वह व्यक्ति अपने काम से अथवा स्वयं से खुश नहीं है। किसी न किसी अन्य को अपनी परेशानी का कारण बताकर कोसना शुरू कर देगा। यह हाल तो तब है जबकि यह सेवा उन्होनें बड़ी खुशी से अपनायी थी और यही सेवा उनकी आवश्यक्ताओं और सामाजिक रुतवे का आधार है। और इस सेवा को पाने के लिये लाखों लोग तरस रहे हैं।

आजकल तो यह सामान्य सी बात हो गयी है| संसार ऐसे उदाहरणों से भरा पड़ा है और ऐसी घटनायें हमें आम जीवन में देखने और सुनने को मिलती हैं|

आइये हम इसे एक और अनुभव के द्वारा समझने का प्रयास करते हैं|

सुश्री श्रद्धा जोकि भारतीय प्रशाशनिक सेवा में जिलाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं। उनके घर में कुल तीन सदस्य हैं और तीनों ही प्रथम श्रेणी के सरकारी अधिकारी हैं| जीवन में यह मुकाम पाने के लिये उनके परिवार ने और उन्होने जी तोड़ मेहनत की है। इस मेहनत के पूरे दौर में वह और उनका परिवार कभी भी सुख का अनुभव नहीं कर पाये हैं। वे कभी भी चैन से नहीं बैठ पाये हैं और संघर्ष करते ही रहे हैं। पढ़ाई के दिनों से लेकर अब तक का सफर परिस्थितियों से लड़ते ही बीता है।

परन्तु अब उनके पास रुपया-पैसा, ओहदा, रुतवा, सम्मान, गाड़ी, बंगला, नौकर-चाकर, सुविधाएँ एवं जीवन के लिए काम आने वाले सभी संसाधन आवश्यकता से अधिक मात्रा में उपलब्ध हो गये हैं| परिवार सांसारिक साधनों से सम्पन्न हो गया है। आपस में कोई मतभेद अथवा कलह भी नहीं है|

परन्तु आश्चर्य यह है कि उनके जीवन में ख़ुशियाँ नहीं है|

वह अपने जीवन से खुश नहीं है, बस जिन्दगी है कि एक मशीन की तरह चल रही है| रोज सुबह बिस्तर से उठने को मन नहीं होता है, परन्तु सिर्फ जिम्मेदारियों को निभाने उठना पड़ता है| राजनीतिक लोग और प्रशाशनिक अधिकरीयों के फोन कॉल आने लगते हैं और फिर मजबूर

होकर उठना पड़ता है । सुबह से शाम तक जितने भी काम वह करते हैं, उसमें उनकी अपनी कोई रूचि नहीं होती,बस मजबूरन करने पड़ते हैं| पूरे दिन में ख़ुशी के कुछ पल भी उन्हें हासिल नहीं हो पाते| रोज रात को थककर सोना पड़ता है| अगले दिन की चिंता अक्सर नींद नहीं आने देती और स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ गया है| उन्होंने बताया कि उन्हें जीवन बोझ लगने लगा है, मन में एक छटपटाहट होती है और ऐसी इच्छा होती है कि सब कुछ छोड़कर कहीं साधारण जीवन जीया जाये।

शायद आपके लिए यह आश्चर्य का विषय बने कि एक शीर्ष श्रेणी का अधिकारी जिसके पास वह सब कुछ है जो कि इस देश के करोंड़ों लोगों का सपना होता है,उसे पाकर भी वह खुश नहीं है तो **बात साफ़ है कि यह व्यक्ति सफल नहीं है|**

यह इस व्यक्ति की सफलता हो ही नहीं सकती क्योंकि जीवन में इतनी मेहनत और संघर्ष करके उन्होंने यह पद और सम्मान प्राप्त किया है और संघर्ष के दिनों में उनके परिवार ने यह सपने देखे थे कि प्रशाशनिक अधिकारी बनकर उन्हें सुख प्राप्त हो जायेगा परन्तु ऐसे सुख की प्राप्ति उन्हें नहीं हो सकी|

इस प्रकार की सफलता जहाँ व्यक्ति बंधन अनुभव करे, उसे सफलता तो शायद नहीं कहा जा सकता| और यह स्थिति अकेले श्रद्धा की ही नहीं है अपितु संसार में अधिकतर लोग इसी प्रकार से हैं। उनमें से अधिकतर तो झूठी शान के मुखौटे के पीछे जीवन भर अपना दर्द और व्यथा छुपाये रहते है । उन्हें डर होता है कि जिस उपलब्धि को बयान कर-करके उन्होने और दूसरों ने समाज में उन्हे सफलता के जिस शीर्ष पर बिठा दिया है उसका उनके अपने लिये कोई अर्थ नहीं है और उनकी सफलता के इस खोखलेपन को वो किस मुँह से संसार के सामने जाहिर करें। लोग उनके बारे में पता नहीं क्या-क्या सोचेंगे। श्रद्धा जैसे कुछ साह्सी लोग ही अपनी समस्या का खुलासा कर पाते हैं । सच मानें बड़ी हिम्मत करनी पड़ती है इसके लिये।

श्री रंजन राव एक विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार हैं और बड़े प्रयास और कठिन परिश्रम के बल पर उन्हें यह मुकाम हासिल हुआ है। मेरे विधि-स्नातक के परीक्षाफल के सम्बंध में एक कार्यवश मुझे उनसे चार बार मिलने का मौका मिला था।

प्रत्येक बार उनके दफ्तर के आगे मुझे लम्बी लाईन लगी मिलती थी। आधे दिन लाईन में खड़े रहने के बाद ही उनसे मिलने का सौभाग्य मुझे मिल पाता था। और जब मेरे मिलने की बारी आने पर जब अंदर जाकर मैं उनसे मिलता था तो वह लोगों के साथ अवांछित और अप्रिय व्यवहार करते पाये जाते थे। उनका स्वभाव चिड़चिड़ा पाया जाता था और वह प्रार्थी छात्रों को ही उनकी समस्या का जिम्मेवार ठहराकर उन पर बरस रहे होते थे। प्रत्येक बार कोई न कोई कमी बताकर प्रार्थना अस्वीकार कर देते थे। प्रत्येक व्यक्ति उनसे मिलकर असंतुष्ट भाव से विश्वविध्यालय प्रशासन को कोसता बाहर आता था। चार बार मैं तीन सौ किलोमीटर की यात्रा करके उनसे मिलने गया था परंतु एक बार भी उन्होंने मेरी पूरी प्रार्थना नहीं सुनी थी। कई बार तो वह अत्यंत अप्रिय व्यवहार पर उतर आते थे और बीच में ही उठकर बाहर चले जाते थे जिससे लाईन में लगे छात्रों को बड़ी निराशा का सामना करना पड़ता था।

यह पद उनको उनकी योग्यता और वरीयता के आधार पर मिला था। नव-नियुक्त उप-कुलपति महोदय ने उन्हें उनकी अध्यापन योग्यता और वरीयता के आधार पर उन्हें रजिस्ट्रार के पद पर नियुक्त किया था। क्योंकि यह पद मिलना उनके जीवन की एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी अत: इस पद को पाकर वह और उनका परिवारीजन बड़े ही खुश थे ।

परंतु दुर्भाग्य यह था कि इस पद की सामान्य जिम्मेवारियों को निभाने में उनकी कोई रुचि नहीं थी अपितु उन्हें यह सब बोझ सा प्रतीत होता था जिसके चलते कार्यस्थल पर न तो वह खुद खुश हो पाते थे और न ही दूसरों को संतुष्ट कर पाते थे।

यह हाल सिर्फ नौकरी पेशे वाले लोगों का ही नहीं है अपितु अन्य वर्ग भी इससे अछूते नहीं हैं। अधिकतर व्यापारीगण, उद्यमीगण, राजनेता भी ऐसी समस्या भरी जिंदगी जीते हैं।

श्री राम दयाल देश के एक प्रतिष्ठित व्यापारी थे। विभिन्न शहरों में उनके 20 मिल अपने थे। एक सुद्रढ़ व्यापारिक संगठन के वह मालिक थे। उनकी प्रतिष्ठा का अंदाजा एक बात से लगाया जा सकता है कि अनेकों बैंकों के शीर्ष अधिकारी उनके कार्यालय में पूर्व में समय माँगकर मिलने आते थे।

विशाल क्षेत्रफल में उनका घर था। आलीशान मकान और कार्यालय को देखकर ऐसा लगता था जैसे स्वर्ग धरा पर उतर आया हो। घर में आधुनिक विलासिता के सभी साधन उपलब्ध थे। तीस विदेशी कारें और बीस सुरक्षाकर्मी उनके परिवार की सेवा में हमेशा तैनात रहते थे। सम्पदा और संसाधनों के संदर्भ में आस-पास के शहरों में उनके मुकाबले का धनी और प्रभावशाली व्यक्ति कोई दूसरा नहीं था। शाम को रोज श्री राम दयाल जी रात्रि भोज के लिये राजधानी के एक मशहूर पांच सितारा होटल में जाया करते थे। अपना शहर उन्हें छोटा प्रतीत होता था। शहर में उनकी धाक थी और पूरा सरकारी और गैर-सरकारी तंत्र उन्हें अकूत तबज्जो देता था।

मुझे कई वर्ष श्री राम दयाल जी के साथ नजदीक से काम करने का मौका मिला था। मैंने इस व्यक्तित्व को नजदीक से जाना। वह व्यक्ति हमेशा असुरक्षा में जीता था। सामाजिक और व्यापारिक प्रतिष्ठा को बनाये रखने की चिंता दिन-रात खाये जाती थी। चिंता की लकीरें चेहरे पर हमेशा झलकती थीं। बहुत कम मौके ऐसे थे जब राम दयाल जी खुश दिखाई दिये हों। खुशियाँ और सुख तो जैसे जीवन में दूर दूर तक दिखाई ही नहीं देते थे। न तो वह स्वयं खुश थे ना ही संतुष्ट। इसका प्रमाण यह था कि उनके आसपास, बस दूसरों को दिखाने के लिये

कृत्रिम खुशी का मुखौटा पहने रहना उनकी मजबूरी थी। दुनियाँ की नज़रों में वह हस्ती महान रूप से सफल थी परंतु अपनी नजर में वह व्यक्ति पूर्णत: असंतुष्ट और असफल था। इसका परिणाम यह हुआ कि श्री राम दयाल जी की पकड़ धीरे-धीरे व्यापार पर कम होती गयी और अन्तत: उनका व्यापार ठप हो गया। अब उनकी हिम्मत दूसरों का सामना करने की भी नहीं बची थी अत: उन्हें शहर छोड़कर किसी अन्य जगह पर जाकर रहना पड़ा।

ऐसे ही कई अन्य जैसे विजय माल्या, नीरव मोदी, सुब्रता रॉय आदि बिजनेसमैन इस बात के जीवंत और सर्व विदित उदाहरण हैं जिनके पास अथाह सम्पत्ति होते हुये भी इन्हें जीवन में चैन और सफलता नहीं मिल पायी है।

सम्राट अशोक की कहानी

सम्राट अशोक की कहानी हम सबको शायद याद होगी| सम्राट अशोक के राज्य की सीमाओं का विस्तार ईरान तक था और अपने पराक्रम के बल पर उन्होंने आसपास के समस्त राज्यों को जीत लिया था| यह उपलब्धि भी सम्राट को अपनी नज़र में सफल नहीं बना सकी थी। पड़ौस के एक राज्य कलिंग को न जीत पाने की चिंता उन्हें दिन-रात परेशान करती रहती थी| समस्त भारत के राज्यों और राजाओं को जीत लेने पर भी मात्र एक राज्य कलिंग को न जीत पाने की टीस हर क्षण सम्राट अशोक के मन में रहती थी|

इसी क्रम में उन्होंने २६१ ई० पू० अपनी पूरी ताकत झोंककर कलिंग राज्य पर चढ़ाई कर दी| इस युद्ध में १ लाख सैनिक मारे गए और डेढ़ लाख लोग घायल हुए| इस बीभत्स नरसंहार को देख कर जब सम्राट अशोक का ह्रदय परिवर्तन हुआ और यह समझ में आया कि संसार को जीत लेना सफलता नहीं अपितु लालच मात्र है और लालच का कोई अंत नहीं| यह तो रोज अपनी अपेक्षाएं बदलता है|

अंत में सम्राट अशोक को इस क्रत्रिम और अंतहीन मृग-मरीचिका से घृणा हुयी। तत्पश्चात उन्होंने जीवन की महान आवश्यकता की खोज करके सच्ची सफलता और संतुष्टि के मार्ग को प्रशस्त कर अपने जीवन को सार्थक बनाया।

इस अवधारणा को और गहराई से समझने के लिए आप अपने सम्पर्क में आने वाले लोगों से व्यवहार करते समय ध्यान दें तो आप पायेंगे

कि

अधिकतर व्यक्ति ऐसे हैं जिनके पास अपना जीवन बेहतर जीने के लिए आवश्यक सभी साधन उपलब्ध हैं अथवा उन्होंने एकत्र कर लिए हैं। आप और अन्य लोग उन्हें सफल लोगों की श्रेणी में स्थान देते हैं। उनकी किस्मत की सराहना करते हैं। उन्हें विशेष दर्जा देते हैं और उनके आगे स्वयं को दीन-हीन समझते हैं। परंतु उनके व्यवहार करके आप पायेंगे कि वे खुश नहीं हैं, उनके चेहरे मुरझाये हुए हैं, उनके व्यवहार में खीझ, चिड़चिड़ापन, क्रोध और अप्रसन्नता प्रकट हो रही होती है। बनाबटी सफलता के कृत्रिम मुखौटे के पीछे से असंतुष्टि और असफलता की झलक उनके व्यवहार से बाहर आती साफ दिखायी देती है।

खुशी गायब है
जगत परेशान है

मैं जब भी दिल्ली अथवा उसके पास के शहरों का दौरा करता हूँ तो एक अजीब सी बात देखता हूँ कि अधिकतर शहरवासी सड़कों पर अथवा वाहनों में एक स्थान से दुसरे स्थान की तरफ भागे जा रहे हैं| बसें, रेलें, मेट्रो ट्रेन व्यक्तियों से ठसाठस भरी हुयी चल रही हैं|

अधिकतर लोग पढ़े लिखे प्रतीत होते हैं| उनकी गाड़ियाँ, वेशभूषा, फ़ोन, बैग, बोलने-चालने का ढंग आदि सब कुछ चमकदार और शालीन प्रतीत होता है **बस चेहरे हैं कि मुरझाये हुए होते हैं|**

जिनकी उम्र तीस वर्ष के पार होती है उनके चेहरे से तो ऐसा लगता है जैसे वो कभी मुस्कराते ही न हों और जैसे लम्बे समय से हँसे ही न हों| उससे अधिक उम्र के लोग तो जीवन की समस्याओं से ग्रस्त से लगते हैं और ऐसा लगता है जैसे मुद्दतों से खुलकर हँसे ही ना हों। हँसना जैसे भूल ही गए हैं । और बुजुर्ग व्यक्तियों से तो उम्मीद ही क्या करें उन्हें तो उनके शरीर के रोग हंसने ही नहीं देते|

और तो और कम उम्र के बच्चे भी बहुत कम मुस्कराते नज़र आते हैं| लोग सामने हों तो मुस्कराना और हँसना गुनाह समझा जाने

लगा है। कुछ लोग तो चाहकर भी इसलिए नहीं हँसते कि कहीं दूसरे व्यक्ति हँसते देखकर उन्हें पागल न समझ लें| उन्हें ऐसा लगता है कि आजकल के ज़माने में हँसने का ठेका तो सिर्फ पागल लोगों ने ही ले रखा है|

अजीब विडम्बना है कि इस विकसित ज़माने की अब तक की **कि सबसे शिक्षित पीढ़ी की जिन्दगी से हंसी गायब होती जा रही है|** सब चल रहे है अपितु दौड़ रहे हैं परन्तु मंजिल पर कोई नहीं पहुँच रहा| ना तो कोई मंजिल के रास्ते में खुश है और ना ही मंजिल पर पहुँचने के बाद| ऐसा लगता है कि मंजिल तो किसी को मिल ही नहीं रही, सब रास्ते में ही थक रहे है। जरूरतों की पूर्ति के लिए जिन्दगी की भागदौड़ ने सबकी हंसी और ख़ुशी पर ग्रहण सा लगा दिया है। सब आवश्यक से अधिक और समय से पहले ही समझदार हो गए हैं| कैसी विडम्बना है यह **कि व्यक्ति के जीवन की असली आवश्यकता उसके जीवन से गायब होती जा रही है।** संसाधन और सुविधायें बढ़ती ही जा रही हैं परंतु खुशी और संतुष्टि उसी अनुपात में घटती जा रही है। मानव जाति का यह स्वर्णिम दौर है जबकि लोगों के पास आवश्यकता का सभी साजो-सामान जरूरत से अधिक उपलब्ध है परंतु इसके बदले में जो कीमत चुकानी पड़ रही है वह भी कुछ कम नहीं है ।

मानव जाति का यह स्वर्णिम दौर है जब कि लोगों के पास आवश्यकता का सभी साजो-सामान जरूरत से अधिक उपलब्ध है परंतु इसके बदले में जो कीमत चुकानी पड़ रही है वो भी कुछ कम नहीं है।

निष्कर्ष

इन सभी अनुभवों से हमें यह स्पष्ट हो रहा है कि यदि जीवन जीने के लिए संसाधन उपलब्ध हो जाने पर, धन की अधिकता हो जाने पर, ताकत और दबदबा प्राप्त हो जाने पर भी व्यक्ति को सुख और संतुष्टि प्राप्त नहीं होती तो फिर यह सफलता, सच्ची सफलता नहीं हो सकती।

इसका अर्थ यह है कि मात्र साधन उपलब्ध कर लेना एवं धन एकत्र कर लेना जीवन की सफलता नहीं है| केवल संसाधनों का एकत्रीकरण सफलता नहीं हो सकता| सफलता का सत्य इससे अलग होता है| तो फिर हमारे लिए सफलता के इस रहस्य को समझना अब और भी रूचिकर और आवश्यक हो जाता है|

ऐसी सफलता जब दूसरे लोग आपको सफल मानने लगें परन्तु आप स्वयं इसे अपनी सफलता नहीं मानते हों तो यह आपकी सफलता नहीं होती अपितु आपके द्वारा दूसरों की अपेक्षा पर खरा उतरने में आपके परिश्रम का परिणाम मात्र होती है| यदि आपने सिर्फ दूसरों के सपनों को साकार किया है और उसके बाद आपको ख़ुशी नहीं मिली तो निश्चय ही इस प्रकार की सफलता आपके अपने लिए खोखली सफलता होती है अपितु सफलता का ढकोसला होती है|

अपितु यह तो एक अनुबंध होता है जो कि आपके द्वारा दूसरों के लिये पूरा किया गया होता है। इस प्रकार की सफलता में मात्र वह लोग सफल हो रहे होते हैं जिन्होंने ऐसी सफलता के सपने देखे थे| इस प्रकार की सफलता,सफल होने वाले व्यक्ति की भी सफलता हो, इस बात की कोई गारंटी नहीं होती| यदि प्राप्त हुयी सफलता में सफल होने वाले व्यक्ति की निजी अभिलाषा, निजी सपना, अथवा निजी लक्ष्य के अनुरूप नहीं है तो यह सफलता सफल होने वाले व्यक्ति के लिए अर्थहीन है चाहे उसने दूसरों के अनुसार संसार जीत लिया हो| सफलता के अधिकतर उदाहरणों में अक्सर इस प्रकार की ही सफलता देखने को मिलती है|

यदि प्राप्त हुयी सफलता में सफल होने वाले व्यक्ति की निजी अभिलाषा, निजी सपना, अथवा निजी लक्ष्य के अनुरूप नहीं है तो यह सफलता सफल होने वाले व्यक्ति के लिए अर्थहीन है चाहे उसने दूसरों के अनुसार संसार जीत लिया हो| सफलता के अधिकतर उदाहरणों में अक्सर इस प्रकार की ही सफलता देखने को मिलती है|

जीवन उददेश्य

यह सत्य है कि हमें जीवन में दूसरों की अपेक्षाओं पर भी खरा उतरना पड़ता है परन्तु विचार करें कि क्या यह बहुमूल्य मानव जीवन हमें सिर्फ दूसरों के सपने साकार करने के लिए मिला है?

जैसा कि हमारे पौराणिक शास्त्रों में उल्लेखित है कि मानव जीवन चौरासी हज़ार योनियों का चक्र पूरा करने के बाद एक बार मिलता है, यदि ऐसा है तो क्या इस स्वर्णिम अवसर को सिर्फ दूसरों की संतुष्टि के लिए खर्च कर देना उचित है ?

क्या यह समझदारी होगी|

'शायद नहीं'

सफलता एक निजी विचार

प्रत्येक व्यक्ति का जीवन भिन्न है |

प्रत्येक व्यक्ति की बुध्धि और क्षमताएं दूसरों से भिन्न हैं |

प्रत्येक व्यक्ति की पसंद दूसरों से अलग हैं |

तो फिर अपने जीवन को सफल बनाने हेतु लक्ष्य और मार्ग निर्धारित करने का उसका तरीका भी दूसरों से भिन्न हो सकता है |

जिसमें शायद उसकी अपनी सोच के विपरीत किसी अन्य सपने, लक्षय, सोच और दखलंदाजी का कोई स्थान ही न हो |

यदि सफलता का विचार व्यक्ति का स्वयं का विचार है, स्वयं का सपना है, स्वयं का लक्ष्य है, स्वयं का निजी निर्णय है जो कि उसकी अपनी रुचियों और सोच के अनुरूप है तो ही यह उसकी अपनी सफलता को परिभाषित करता है |

परन्तु यदि इसमें उसकी अभिलाषा के विपरीत उसकी सफल होने की अभिलाषा किसी अन्य की है तो ऐसी सफलता के मार्ग में किया गया उसका प्रयास और मिली सफलता एक अनुबंध प्राप्ति की प्रक्रिया भर होगी न की उसकी अपनी सफ़लता |

यह सफलता तो सिर्फ उस अन्य व्यक्ति की ही सफलता होगी जिसने इसका सपना देखा था अथवा लक्ष्य बनाया था प्राप्त करने वाला व्यक्ति तो सिर्फ माध्यम मात्र हैं| और सफल होने पर ख़ुशी और संतुष्टि भी उसी व्यक्ति को ही मिलेगी, जिसने इसका सपना देखा था | और इस प्रकार की सफलता को पाकर प्राप्त करने वाला व्यक्ति स्वयं को असफल और असंतुष्ट ही महसूस करेगा ।

सफलता का कड़वा सच

अब आप सफलता के इस कड़वे सच को समझने का प्रयास करें कि अक्सर बच्चे अपने माँ-बाप की सफलता का माध्यम बनते हैं | हालाँकि यह पढ़कर आप असहज महसूस कर रहे होंगे पर यह बात ही ऐसी है| आप ही नहीं अपितु अधिकतर लोग ऐसा ही समझते हैं | परन्तु यह तथ्य प्रथम दृष्टया पढ़कर और जानकर जितना अटपटा लगता है उतना ही गूढ है |

लोग अपनी सफलता का सपना अपने बच्चों में देखते हैं| माँ बाप यह चाहते हैं कि जो कुछ वह खुद नहीं कर पाए वह उनके बच्चे करें| जिस मुकाम पर अपने जीवन में वह खुद नहीं पहुँच पाए, उस मुकाम को उनके बच्चे हासिल करें| यह कड़वा सच है परन्तु यह सब वह अज्ञानतावश होता है और अधिकतर यही होता है| माँ-बाप यह समझते हैं कि उनके अनुभव और विचार उनके बच्चों को सफल बना देंगे परन्तु घटित इसके ठीक विपरीत होता है।

बच्चों की सफलता हेतु लक्ष्य और रास्ते का निर्धारण रास्ता बच्चों के माँ-बाप द्वारा किया जाता है और अधिकतर मामलों में बच्चे अपने माँ-बाप की बात मानने को बाध्य होते है क्योंकि उनके पास इससे सम्बंधित न तो कोई अनुभव होता है और न ही कोई सोच| और यदि किसी बच्चे के पास कोई अन्तःप्रज्ञा होती भी है तो अक्सर अनभिज्ञता और अस्पष्टता के कारण दब जाती है और इस

प्रकार बच्चों का जीवन और भविष्य माँ-बाप की भावनाओं और सोच के आधार पर बने सफलता के लक्ष्य का माध्यम बन जाता हैं|

हालाँकि माँ-बाप की भावना और सोच इस विषय में गलत नहीं होती, वह बच्चों को वह सुख देना चाहते हैं जो वो खुद नहीं पा सके **परन्तु उनकी यह सोच उनके बच्चों के जीवन के साथ अक्सर खिलवाड़ बन जाती है**| क्योंकि सफल होने का यह निर्णय और मार्ग माँ-बाप का उनकी सोच, जरूरत और पसंद के अनुसार निर्धारित किया गया होता है जिसमें आवश्यक नहीं कि बच्चे की भी रूचि हो क्योंकि बच्चा एक अलग व्यक्ति है,अलग व्यक्तित्व है,उसकी रुचियाँ अलग हैं,उसकी क्षमताएं अलग हैं, उसकी पसंद अलग है |और यह बिलकुल आवश्यक तो नहीं कि एक व्यक्ति के विचार अन्य व्यक्ति के विचारों के साथ मेल खाएं| हर व्यक्ति अपने जीवन को स्वयं के हिसाब जीना चाहता है और अपने जीवन जीने के तौर-तरीके पर किसी अन्य के हस्तक्षेप को मानव-मन सहज ही स्वीकार नहीं करता |

माँ-बाप का भी नहीं |

मानव मन स्वयं के विपरीत सोच वाले

व्यक्तियों का हस्तक्षेप स्वीकार नहीं करता |

चाहे वह माँ-बाप ही क्यों न हों |

इस तथ्य को समझने के लिए बहुत सरल उदाहरण हम अपने परिवार में पा सकते हैं| लगभग सभी बच्चों की पसंद,क्रियाकलाप और सोच अपने अपने माँ-बाप से भिन्न पाई जाती हैं|और लगभग सभी माँ-बाप की यही शिकायत रहती है कि उनके बच्चे उनके हिसाब से नहीं चलते| लगभग सभी बच्चे जब भी स्वतंत्र होते हैं, अपने माँ-बाप की सोच से अलग अपनी सोच रखते हैं| इसका अर्थ है कि बच्चे भी एक स्वतंत्र व्यक्तित्व होते हैं और उनके पास भी एक स्वत्रन्त्र सोच होती है|

यदि बच्चे के जीवन-सफलता की पटकथा सिर्फ उसके माता-पिता के द्वारा लिखी जाती है और बच्चे की इसमें कोई रूचि नहीं होती तो ऐसे निर्णय बच्चे के जीवन में निराशा और हताशा भर देते हैं| इस प्रक्रिया में बच्चा तो सिर्फ अपने जीवन की बलि सफलता के लिए इसलिए चढ़ा देता है क्योंकि वह अपने माँ-बाप की इच्छा से अलग अपनी निजी इच्छा का इजहार करने का साहस वह नहीं कर पाता|

सफल जीवन वह जीवन होता है जो पूरी सम्भावना की उच्च सीमाओं तक विकसित हो| प्रत्येक व्यक्ति अपने जीवन में पूरी तरह से खुलकर विकसित होकर इस संसार के विकास में वह योगदान करे जो कुछ भी वह अधिकतम कर सकता है| और ऐसा वह तभी कर सकता है जब सफल होने का लक्ष्य उसका अपना हो अथवा उसकी लक्ष्य में रूचि और भागीदारी हो|

इसलिए माता-पिता अथवा अन्य व्यक्तियों को चाहिए कि बच्चे अथवा व्यक्ति को लक्ष्य निर्धारण में आवश्यक सहयोग करें और बच्चों को अपनी क्षमताओं, रुचियों और व्यक्तित्व के अनुसार निर्णय लेने की क्षमता विकसित करने में सहयोग करें और अपनी राय थोपने से बचें | उन्हें अपने स्वयं के लक्ष्य बनाने दें और लक्ष्यों को हासिल करने में सहयोगी भूमिका निभाएं परन्तु मुख्य भूमिका में बच्चे को स्वयं ही रहने दें|

सच्ची सफलता

सफलता व्यक्तिगत सपने का साकार रूप होती है|

आपका जीवन दूसरों से अलग है। आपकी रुचियाँ दूसरो से अलग हैं। आपका व्यक्तित्व दूसरों से अलग है। आपकी ऊर्जा, पसंद ,क्षमताएं, सोच और भावनाएं भी दूसरों से भिन्न हैं।

ध्यान दें कि आपकी रुचियाँ, आपका व्यक्तित्व, आपकी ऊर्जा, पसंद, क्षमताएं, सोच और भावनाएं मिलकर यदि किसी उद्देश्य को पूरा करने का लक्ष्य निर्धारण करती हैं तब कोई एक सपना बनता है आपके अंतर्मन में, बस उस लक्ष्य को बनाना और फिर उसकी तरफ कदम बढ़ाना और उस लक्ष्य को हासिल करना ही होती है 'आपकी अपनी सफलता'

जब व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य के मार्ग पर चलना शुरू करता है तो उस मार्ग पर हर एक कदम पर उसे ख़ुशी मिल रही होती है,उसे संतुष्टि मिल रही होती है और उस संतुष्टि और ख़ुशी के साथ उस मार्ग में आगे बढ़ते रहने के लिए उसे सबल मिल रहा होता है|उस मार्ग पर मिलने वाली उस ख़ुशी और संतुष्टि को ही सच्ची सफलता कहते हैं| सफलता उस लक्ष्य पर पहुँचने के बाद नहीं अपितु उस मार्ग पर एक-एक कदम पर मिलने वाली ख़ुशी और संतुष्टि का यथार्थ पर्याय होता है|

जब व्यक्ति का स्वयं के सपने का एक अंश भी साकार हो रहा होता है तब एक विशेष ख़ुशी व्यक्ति को अनुभव हो रही होती है, एक गहरी संतुष्टि व्यक्ति के मन को मिल रही होती है| यह ख़ुशी और संतुष्टि इतनी

प्रबल होती है कि मार्ग पर आने वाली समस्याएं भी व्यक्ति का मनोबल कम नहीं कर पातीं और मार्ग की सारी समस्याओं से जूझता हुआ व्यक्ति सफलता के मार्ग पर बढ़ता ही जाता है बस यही है वह सफलता का मार्ग जहाँ आप जाना चाहते हैं, यही आपको उस सोपान तक पहुंचाएगा जो आपके जीवन का असली ध्येय है|

आपकी रुचियाँ, आपका व्यक्तित्व, आपकी ऊर्जा, पसंद, क्षमताएं, सोच और भावनाएं मिलकर यदि किसी उद्देश्य को पूरा करने का लक्ष्य निर्धारण करती हैं तब कोई एक सपना बनता है आपके अंतर्मन में, बस उस लक्ष्य को बनाना और फिर उसकी तरफ कदम बढ़ाना और उस लक्ष्य को हासिल करना ही होती है 'आपकी अपनी सफलता'

जब व्यक्ति अपने जीवन लक्ष्य के मार्ग पर चलना शुरू करता है तो उस मार्ग पर हर एक कदम पर उसे ख़ुशी मिल रही होती है,उसे संतुष्टि मिल रही होती है और उस संतुष्टि और ख़ुशी के साथ उस मार्ग में आगे बढ़ते रहने के लिए उसे सबल मिल रहा होता है|उस मार्ग पर मिलने वाली उस ख़ुशी और संतुष्टि को ही सच्ची सफलता कहते हैं| सफलता उस लक्ष्य पर पहुँचने के बाद नहीं अपितु उस मार्ग पर एक-एक कदम पर मिलने वाली ख़ुशी और संतुष्टि का यथार्थ पर्याय होता है|

खुशी: सफल जीवन का प्राकृतिक मानक

सत्य यह है कि

- सफल-जीवन का मानक ख़ुशी है।
- यही खुशी मानव जीवन की मूल, आधारभूत और प्राकृतिक आवश्यकता है।
- यही रहस्य है सफल जीवन का।

सफल जीवन का अभिप्राय खुश होने से है। मानव जीवन की मूल, आधारभूत और प्राक्रतिक आवश्यकता 'खुश रहना' होती है।'

मनुष्य के रोम रोम में एक ही अभिलाषा होती है और वह है ख़ुशी, आनंद और संतुष्टि पाने की।

ख़ुशी अपने आप में समग्र और व्यापक शब्द है जिसमें आनंद और संतुष्टि अन्तर्निहित होते हैं। हर व्यक्ति चाहता है कि वह सुख से जीवन का भरपूर आनंद लेकर संतुष्ट होता रहे और यह क्रम जीवन पर्यंत चलता रहे। बस इसी की खोज में हम जीवन पर्यंत लगे रहते हैं परन्तु विडंवना यह है कि अधिकतर लोग इसे जीवन में प्राप्त नहीं कर पाते। और व्यर्थ की भाग-दौड़ में कीमती जीवन को खर्च कर लेते हैं।

आगे लिखी क्रिया को एक बार अभ्यास कर चिंतन करने से

इस रहस्य को समझा जा सकता है।

अभ्यास: अन्तःखोज

यदि आप अपनी दोनों आँखें बंद करके अपने अंतर्मन में झाँककर देखें तो आप पाएंगे कि आपकी सभी इच्छाओं का अंतिम परिणाम सिर्फ एक ही है और वह है **'ख़ुशी की प्राप्ति'**|

पैसे की चाहत हो, मनपसंद जीवनसाथी अथवा प्यार की चाहत हो, मनपसंद घर की चाहत हो, मनपसंद गाड़ी की चाहत हो, मनपसंद प्रसिद्धि की चाहत हो, अच्छे स्वास्थ्य की चाहत हो, लम्बे जीवन की चाहत हो अथवा ईश्वर प्राप्ति की चाहत हो| यदि आप आत्म विश्लेषण करें तो आप निश्चित ही यह पाएंगे कि इन सारी इच्छाओं के परिणाम के सारे रास्ते एक ही चौराहे पर आकर मिलते हैं और वह है **'ख़ुशी'**,यानी प्रसन्नता पाना| प्रत्येक इच्छा का अंतिम उद्देश्य 'खुश होना' अथवा 'खुश रहना' ही होता है| आइये इस बात को हम अनुभवों से समझने का प्रयास करते हैं।

सफलता: विचार से बँगले तक

हरिपुर गाँव में गोपाल नामक एक ग्वाला रहता था| गोपाल गाय-भैंस पालकर दूध बेचने का काम करता था| गोपाल बड़ा ही मेहनती व्यक्ति था और दिन रात मेहनत करके अपने परिवार का जीवन यापन कर रहा था | एक बार की बात है कि गोपाल बीमार पड़ गया तो उसने अपने बेटे श्याम को शहर जाकर दूध बेचने की जिम्मेवारी दे दी| अगले दिन से बालक श्याम अपने पिताजी के कहे अनुसार टंकियों में दूध भरकर शहर में जाकर दूध बेचने लगा |

दूध बेचकर श्याम को पैसे मिलने लगे| जीवन में इतने पैसे इकठ्ठे उसने पहली बार देखे थे तो श्याम के बाल-मन में नए नए विचार आने लगे| एक दिन जब श्याम दूध लेकर शहर की तरफ जा रहा था तो वह सोचने लगा कि मेरे पिताजी दिन-रात मेहनत करते हैं फिर भी हमारा परिवार सुखी नहीं हैं जबकि जो लोग हमसे दूध खरीदते हैं वह हमसे कम मेहनत करते हैं फिर भी हमसे ज्यादा सुखी हैं| हम झोंपड़ी में रहते हैं और यह लोग बड़े बड़े घरों में रहते हैं और बड़ी बड़ी गाड़ियों में चलते हैं| इसका कारण शायद यह है कि मेरे पिताजी का स्वभाव सीधा साधा है और इस शहर के लोग चालाक हैं और मेरे पिताजी को दूध का सही दाम नहीं देते हैं|

उसने सोचा कि मैं क्यों न ऐसा कुछ करूँ कि हमारे घर की हालत सुधर जाये और हम भी शहर के लोगों की तरह सुखी हो जाएँ| यह सोचकर उसने निर्णय लिया कि कल से मैं इस शहर के लोगों को दूध

बेचने के बजाय दूसरे शहर में जाकर ऊंचे दाम में दूध बेचूंगा| यदि ज्यादा दाम मिले तो फिर रोज वहीँ जाकर दूध बेचा करूंगा और फिर हमारी आमदनी बढ़ जाएगी और फिर बढ़ी हुयी आमदनी से हम और गाय-भैंसें खरीद लेंगे| और फिर ज्यादा गाय-भैंसों से ज्यादा दूध पैदा होगा तो फिर ज्यादा दूध बेच-बेचकर हम एक बड़ी डेयरी बनायेंगे और फिर और ज्यादा दूध पैदा होगा तो और अधिक भाव पर दूध बेच बेच कर हम एक बड़ा सा घर बनायेंगे और दूसरे किसान भी हमें दूध बेचने आया करेंगे फिर हम दूध ले जाने के लिए एक बड़ी गाड़ी खरीदेंगे फिर हमारे यहाँ नौकर चाकर काम करेंगे और फिर हम भी सुख से जीवन बिता सकेंगे|

इस प्रकार अपनी योजना के अनुसार श्याम अगले दिन दूसरे शहर पहुंचा और इत्तफाकन उस नये शहर के लोगों को उसका दूध पसंद आ गया और दूध देखते ही देखते ऊंचे दाम पर बिक गया|

श्याम की खुशी का ठिकाना ही ना रहा। आज उसके कदम धरती पर नहीं पड़ रहे थे । वापसी में उसे ऐसा प्रतीत हो रहा था जैसे कि वह हवा में उड़ रहा हो । उसकी मनोस्थिति उस बाद्शाह के जैसी थी जो कोई असाधारण जंग जीत कर लौट रहा हो । अपनी योजना को सफालता की पहली सीढ़ी हासिल हुयी थी।

श्याम को अब अपनी योजना सफल होती प्रतीत हो रही थी । अपनी इस पहली सफलता से बालक का मनोबल बढ़ गया और वह रोज दूसरे शहर में ही दूध बेचने लगा| **श्याम को अपने इस कार्य में दिन प्रतिदिन आनंद आने लगा तो वह रोज दुगुने जोश के साथ मेहनत करने लगा| अब दिन-ब-दिन उसकी रुचि काम में बढ़ती ही जा रही थी। उसे काम में आनंद आ रहा था, खुशी मिल रही थी और एक विशेष संतुष्टि का अनुभव हो रहा था।**

गोपाल भी अब ठीक हो गया था तो श्याम ने सारी बात अपने पिता को बताई और आग्रह किया कि अब से वह स्वयं ही शहर जाकर दूध बेचेगा| गोपाल की भी उम्र हो गयी थी अतः उसने श्याम की बात सहजता से मान ली|

समय बीतता गया और श्याम को अपने कार्य में जितनी ख़ुशी और संतुष्टि मिलती जा रही थी उससे दूनी निष्ठा और समर्पण भाव से वह अपने काम को कर रहा था| इसका परिणाम यह हुआ कि कुछ ही वर्षों बाद श्याम ने एक गाँव में एक बड़ी डेयरी खोल ली और दूध ले जाने के लिए एक ट्रक खरीदा| अब उनके पास आस-पास के गाँवों के ग्वाले भी अपना दूध बेचने आने लगे| धीरे धीरे उनका काम इतना बढ़ गया कि उसे काम संभालने के लिए कई कर्मचारी काम पर रखने पड़े| श्याम हमेशा खुश रहता था अत: उसके स्वभाव में नम्रता और उत्साह छलकने लगा था जिसे देखकर नौकर और अधिक उत्साह से काम करते थे । इस प्रकार श्याम का दूध का कारोबार दिन-दूनी, रात-चौगुनी गति से बढ़ता ही चला गया । अब श्याम ने गाँव में अपने रहने के लिये एक आलीशान बँगला बनबाया और पूरा परिवार शहर के अन्य लोगों की भाँति सुखपूर्वक अपना जीवन जीने लगे।

इस कहानी में गौर करें तो हम पाते हैं कि दूध, गाय, भैंसें, तबेला, बड़ा घर, नौकर चाकर, गाडी इन सब चीजों की इच्छा का अंतिम उद्देश्य 'सुख पाना' था|और क्योंकि लक्ष्य ,विचार, सपना और अभिलाषा श्याम की स्वयं की थी तो उसे अपनी पूरी क्षमतायें और निष्ठा काम में लगाने में आनंद आ रहा था| एक एक दिन उसे अपनी मंजिल की तरफ ले जा रहा था और उसे संतुष्टि और आनंद की प्राप्ति हो रही थी| यह सफलता श्याम की सच्ची सफलता थी।

खुशियाँ-खेल विचारों का

साधना जो कि एक समृद्ध परिवार की महिला थी, वह अपने जीवन से अत्याधिक परेशान थी। अपने जीवन में उसे अंधेरा ही अंधेरा महसूस होने लगा थ। एक दिन एक मनोचिकित्सक के पास गई और बोली "डॉक्टर साहब ! मुझे लगता है कि मेरा पूरा जीवन बेकार है, उसका कोई अर्थ नहीं है। खुशियाँ मेरे जीवन से गायब हो गयी हैं। क्या आप मेरी खुशियाँ ढूँढने में मदद करेंगें?"

मनोचिकित्सक ने अपने यहाँ साफ़-सफाई करने वाली एक बूढ़ी औरत को बुलाया और साधना से बोला - "मैं इस बूढी औरत से तुम्हें यह बताने के लिए कहूँगा कि कैसे उसने अपने जीवन में खुशियाँ ढूँढी। मैं चाहता हूँ कि आप उसे ध्यान से सुनें।"

तब उस बूढ़ी औरत ने अपना झाड़ू नीचे रखा, कुर्सी पर बैठ गई और बताने लगी - "मेरे पति की मलेरिया से मृत्यु हो गई और उसके तीन महीने बाद ही मेरे बेटे की भी सड़क हादसे में मौत हो गई। मेरे पास कोई नहीं था। मेरे जीवन में कुछ भी तो नहीं बचा था। मैं सो नहीं पाती थी, खा नहीं पाती थी, मैंने मुस्कुराना तो बंद ही कर दिया था।"

मैं स्वयं के जीवन को समाप्त करने की तरकीबें सोचने लगी थी। एक दिन जब मैं काम से घर आ रही थी तो मैंने पाया कि एक छोटा बिल्ली का बच्चा मेरे पीछे-पीछे घर में घुस आया था। बाहर बहुत ठंड थी इसलिए मैंने उस बच्चे को अंदर आने दिया। उस बिल्ली के बच्चे के लिए थोड़े से दूध का इंतजाम किया। वह दूध पी कर मेरे पैरों से लिपट गया और चाटने लगा।"

"उस दिन बहुत महीनों बाद मैं मुस्कुराई। तब मैंने सोचा यदि इस बिल्ली के बच्चे की सहायता करने से मुझे ख़ुशी मिल सकती है,तो हो सकता है कि दूसरों के लिए कुछ करके मुझे और भी ख़ुशी मिले। इसलिए अगले दिन मैं अपने पड़ोसी, जो कि बीमार और असहाय था,के लिए कुछ खाना बना कर दे आयी, तो मुझे और खुशी का अनुभव हुआ।

उसके बाद तो जैसे मुझे जीवन का मकसद ही मिल गया थ। अब हर दिन मैं कुछ नया और कुछ ऐसा करती थी जिससे दूसरों को ख़ुशी मिले और उन्हें खुश देख कर मुझे ख़ुशी मिलती थी।अब मैंने खुशियाँ ढूँढ ली हैं, दूसरों को ख़ुशी देकर।"

यह सुन कर साधना रोने लगी। उसके पास वह सब था जो वह पैसे से खरीद सकती थी। लेकिन उसने वह चीज खो दी थी जो पैसे से नहीं खरीदी जा सकती।

मित्रों! हमारा सफल जीवन इस बात पर निर्भर करता है कि हम कितने खुश हैं और हमारी खुशी की मात्र इस बात पर निर्भर करती है कि हमारी वजह से कितने लोग खुश हैं।

संतुष्टि, खुशी का प्रतीक है और खुशी सफलता का प्रतिविम्ब है।

जीवन एक खेल है दोस्तों और इस खेल को जीत लेना ही जीवन की सच्ची सफलता है| और खेल हमेशा खेलकर जीता जाता है| खेलने के दौरान कदम-कदम पर प्राप्त खुशी और संतुष्टि से तृप्त होते रहना ही सच्ची सफलता है। यही सफल जीवन का सूत्र है|

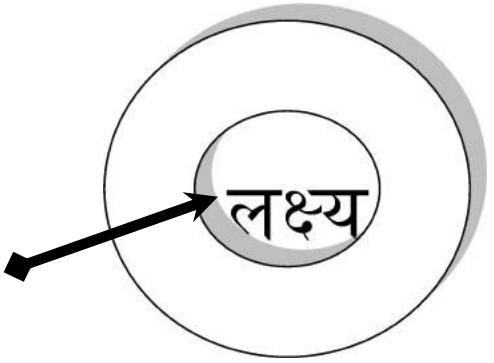

लक्ष्य की प्राप्त के बाद मिली ख़ुशी अक्सर क्षणिक होती है।

सफलता की सीढ़ी चढ़ने के बाद व्यक्ति को जो ख़ुशी मिलती है वह जल्दी ही सामान्य सी प्रतीत होने लगती है| उसके बाद व्यक्ति यह सोचने लग जाता है कि असली ख़ुशी तो शायद सफलता की अगली सीढ़ी पर मिलेगी| इसी क्रम में वह अगला लक्ष्य निर्धारित कर लेता है और अगले लक्ष्य के चक्कर में पिछली सफलता से मिली ख़ुशी की अनुभूति को खो देता है।

इसी क्रम में सीढ़ी दर सीढ़ी वह जीवनभर दौड़ता रहता है और अंत तक वह जैसी सफलता चाहता है, को प्राप्त नहीं कर पाता और इसी पहेली में जीवन बीत जाता है और व्यक्ति सच्ची सफलता के आनंद से वंचित रह जाता है। जबकि प्रत्येक कदम पर मिल रही कतरा-कतरा खुशी से प्राप्त संतुष्टि का रस पीने वाले लोग सफलता की बाज़ी जीत लेते हैं और अपना जीवन सफल बना लेते हैं।

इस ई-बुक सीरीज के आगे के भागों के द्वारा आप आसानी से यह निर्धारित कर सकते है कि:-

हमारा अपना जीवन लक्ष्य क्या हो,

कैसे हम जीवन लक्ष्य निर्धारित करें और

निर्धारित जीवन लक्ष्य को कैसे प्राप्त करें .....

इस सीरीज के अगले अध्याय प्राप्त् करने के लिए कृपया suyogincorporation@gmail.com पर ईमैल भेजें|

इस सीरीज को और अधिक उपयोगी बनाने हेतु कृपया अपने सुझाव हमें suyogincorporation@gmail.com पर भेजें|

लेखक के बारे में

इस सीरीज के लेखक एक सफल व्यक्तित्व के धनी हैं| अपने जीवन में लेखक ने मानव जीवन का गहराई से अनुभव और अध्ययन किया है। वहीँ से लेखक को यह प्रेरणा मिली कि अधिकतर लोग स्वयं, परिवार, कार्य और समाज के मध्य सटीक तालमेल नहीं बना पाते अतः दुखी जीवन जीते हैं और जीवन के सच्चे आनंद और ख़ुशी से वंचित रह जाते हैं| लेखक का मत है कि जीवन की प्रत्येक स्थिति को सकारात्मकता और सहजता से जीया जा सकता है|

लेखक विभिन्न मानवीय विषयों पर समाज की जागरूकता में विशेष योगदान देने का कार्य करते हैं और समाज के विभिन्न वर्गों को श्रेष्ठ स्वास्थ्य, जीवन और सफलता हेतु प्रेरित करते रहते हैं। व्यावसायिक जीवन में लेखक ने विभिन्न व्यापारिक घरानों और बहुराष्ट्रीय संस्थानों में मानव अधिकार और प्रशाशनिक क्षेत्रों के उच्च पदों पर अपनी सेवायें दीं हैं | अपने जीवन में लेखक ने मानव कल्याण और सामाजिक विकास हेतु योगदान को प्राथमिकता दी है|

लेखक का जन्म उत्तर प्रदेश राज्य के जनपद आगरा के दूरवर्ती गाँव साँधन में एक किसान परिवार में हुआ था| लेखक का जीवन बड़े ही उतार-चढाव में, शिक्षा से परे असामाजिक और अव्यवहारिक परिवेश में बीता है जिसके फलस्वरूप लेखक की रूचि पढाई में बहुत कम थी| एक शुभचिन्तक ने लेखक को शिक्षा और सफलता का सही अर्थ समझाकर लेखक के मानस पटल पर जमीं अज्ञानता की धूल को साफ़ करके जीवन का सही अर्थ समझाया| तत्पश्चात लेखक ने जीवन को सफल बनाने हेतु लक्ष्य और मार्ग और निर्धारित किया| लेखक ने जब अपने जीवन मार्ग पर चलना शुरू किया तो इस दौर में उन्हें अनेकों कठिनाइयों से वाकिफ होना पड़ा परन्तु लेखक ने जीवन की परिस्थितिओं का डटकर सामना किया और प्रत्येक स्थिति को सहजता और खुशी से जिया| लेखक ने जीवन जीने की इस अद्भुत कला से अपने जीवन में आनन्द और सफलता को प्राप्त कर जीवन के प्रयोगशाला परीक्षण में सफलता हासिल कर ली है और वही सफल जीवन जीने हेतु दूसरो का मार्गदर्शन कर रहे हैं |

लेखक एक सफल लेखक, Trainer, Success Coach and Career Counselor हैं और देश-विदेश की विभिन्न संस्थानो में सेवाये देते हैं ।

सम्पर्कसूत्र:
Lokmansingh3600@gmail.com
suyogincorporation@gmail.com
Ph:- +91 – 79888-09395

-धन्यवाद-